दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17–HL-**HL7**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): सुनील कुमार यादव

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल न. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 7, 27/9/17

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: 0 0 9 7 6 4 6

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 78

टिप्पणी (Remarks): लिखे गए अधिकांश उत्तर अच्छे हैं। कुछ को बेहतर बनाने की आवश्यकता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) यहु तन जालौं मसि करुं, ज्यूं धुंवां जाई सरग्गि।
मति वै राम दया करै, बरसि बुझावै अग्गि।

कबीर

सन्दर्भ:- प्रस्तुत पद्यांश आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा संकलित मलिक मुहम्मद जायसी की रचना 'पद्मावत' के नागमती वियोग खण्ड से ली गयी है।

प्रसंग और व्याख्या:-
रत्न सेन के सिंहल द्वीप चले जाने पर नागमती के विरह को बारहमासा वर्णन के आधार पर दिखाते हुए जायसी लिखते हैं कि नागमती अपने तन को जलाकर राख कर देना चाहती है। उसके धुएं को स्वर्ग पहुँचा रही है। जिससे बारिश होकर बरस जाए। इस प्रकार रतन सेन को भी उसके विरह का पता चले और नागमती के विरह की आग ठंडी हो जाए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भावगत सौन्दर्य:-

(i) नागमती का विरह वर्णन आईतिहासिक चेतना से युक्त है। तत्कालीन हिन्दी साहित्य में विरह वर्णन में अद्वितीय है।

(ii) नागमती का विरह वर्णन, बिहारी की नायिका की तरह उहात्मक प्रतीत नहीं हो रहा है।

(iii) विरह वर्णन में परम्परागत रूढि का प्रयोग किया गया है।

(iv) "यह तन जारौं छार कै कहौं कि पवन उड़ाव" में भी यही भाव व्यक्त हुआ है।

शिल्पगत विशेषता:-

(i) जायसी की भाषा में अवधी का ठेठापन और सरसता द्रष्टव्य है।

(ii) अति शयोक्ति पूर्ण वर्णन -

(iii) उत्प्रेक्षा अलंकार का भी प्रयोग।

(iv) बिम्ब और प्रतीक का भी प्रयोग. "बाति', 'अगिन'

(v) भाषा में प्रभाव भी अत्यन्त समृद्ध है।

2/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) उर में माखनचोर गड़े।
अब कैसेहू निकसत नहिं, ऊधो ! तिरछे है जो अड़े।।
जदपि अहीर जसोदानंदन तदपि न जात छँड़े।
वहाँ बने जदुबंस महाकुल हमहिं न लगत बड़े।।
को बसुदेव, देवकी है को, ना जानैं औ बूझै।
सूर स्यामसुन्दर बिनु देखे और न कोऊ सूझै।।

सन्दर्भ:- प्रस्तुत पद्य रामचन्द्र शुक्ल जी द्वारा संकलित महाकवि सूरदास की रचना "भ्रमर गीत सार" से ~~ली~~ लिया ~~गई है~~ गया है।

प्रसंग एवं व्याख्या:- गोपियाँ उद्धव से कह रही हैं कि कृष्ण किस प्रकार उनके हृदय में निवास करते हैं, कृष्ण उनके हृदय में तिरछे अड़े हुए हैं। जिस कारण निकल नहीं पा रहे हैं। वे अपनी उपालम्भ शैली में कहती हैं कि वे भले बड़े हैं, राजा हैं लेकिन उनके लिए वे आज भी वही मथुरा के कृष्ण हैं।

वे कहती हैं कि कृष्ण के माता पिता देवकी, व वसुदेव को वे नहीं जानती हैं वे तो भी कृष्ण के अलावा किसी को देखती तक नहीं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भावगत सौन्दर्य:-

(i) कृष्ण और गोपियों के बीच के आत्मिक प्रेम की सुन्दर अभिव्यक्ति।

(ii) कृष्ण और गोपियों के माध्यम से प्रतीक रूप में आत्मा और परमात्मा के बीच के सम्बन्ध को भी समझा जा सकता है।

(iv) विरह में और प्रेम होता बड़ा जैसा कोई भाव नहीं होता है। यहाँ पर सूरदास की साख्य-भक्ति का अवलोकन किया जा सकता है।

शिल्पगत विशेषताएं:-

(i) भाषा में ब्रजभाषा की मधुरता और कोमलता की स्पष्ट छाप।

(ii) "गड़े" और "अड़े" जैसे शब्दों के प्रयोग से भाषा की सृजनात्मक क्षमता और प्रयोग की प्रवीणता का पता चलता है।

(iii) "अहीर" और "यदुबंस" में व्यंग्य और स्थापना का अद्भुत सम्बन्ध।

(iv) अलंकार योजना भी अद्वितीय है।

ठीक है
6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) दादुर मोर कोकिला पीऊ। करहिं बेझ घट रहै न जोऊ।
पुख नछत्र सिर ऊपर आवा। हौं बिनु नाँह मंदिर को छावा।
जिन्ह घर कंता ते सुखी तिन्ह गारौ तिन्ह गर्व।
कंत पियारा बाहिरें हम सुख भूला सर्व।।

सन्दर्भ:- प्रस्तुत पंक्तियाँ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा संकलित जायसी की 'पदमावत' के 'नागमती वियोग' खण्ड से ली गयी हैं।

प्रसंग एवं व्याख्या:- नागमती वियोग को बारह मासा वर्णन द्वारा दिखाते हुए उसके गृहस्थ जीवन की चिन्ताओं बहुत ही मार्मिक ढंग से दिखाया गया है। नागमती को अपने गृहस्थ जीवन की चिन्ता है। मेढक, मोर, कोयल आदि का बोलना उसे और चिंतित कर रहा है, वर्षा की पुख नक्षत्र आ गयी है, इसलिए घर पर भी नहीं है, जिनके पति घर पर हैं उन्हें चिन्ता है लेकिन नागमती का पति 'बाहर' है इसलिए वह सब सुख भूल चुकी है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न सख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

काव्यगत सौन्दर्य :-

(I) नागमती का वियोग वर्णन हिन्दी साहित्य में अद्वितीय है।

(II) नागमती का वियोग, गार्हस्थिक चेतना से युक्त है। इसलिए इसमें अपनी घर-गृहस्थि की चिन्ता है।

(III) काव्य रुढ़ि में बारह-मासा तथा शुक-शुकनी आदि प्रयोग नागमती के वियोग में दिखाई पड़ता है।

(IV) नागमती का विरह वियोग अपने गार्हस्तिक चेतना के कारण हिन्दी साहित्य में अद्वितीय स्थान रखता है।

(V) भाषा - अवधी

(VI) उत्प्रेक्षा तथा उपमा अलंकार प्रयोग।

(VII) बिम्ब - श्रव्य तथा दृश्य दोनों का है।

(VIII) प्रतीक रूप में घर छाने की चिन्ता के साथ पति की चिन्ता का भाव भी है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) नैंक हँसो ही बानि तजि, लख्यौ मुहुँ नीठि।
चौंका-चमकनि-चौंध मैं परति चौंधि सी डीठि।।

सन्दर्भ:- प्रस्तुत दोहा रीतिकाल के सागर में गागर भरने वाले बिहारी की 'बिहारी सतसई' रचना से लिया गया है।

प्रसंग एवं व्याख्या:- ① नायक व नायिका के बीच के मौन संवाद को दिखाती हुई पंक्तियों में, कवि बिहारी नायक व नायिका के मनोविज्ञान को पकड़ते हैं।

जब नायक नायिका एक-दूसरे को देखते हैं तो बात करना बन्द हो जाता है। केवल एक दूसरे का मुँह निहार रहे होते हैं। जैसे ही आँख मिलती है। वे चौंक जाते हैं।

काव्यगत सौन्दर्य:-
① दोहा छन्द का प्रयोग।
② गागर में सागर वाली पंक्तियाँ।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(iv) रूपक अलंकार का प्रयोग- चौका - अमावस चौंध "

(v) उपमा अलंकार - "चौंधि सी जौंधि"

(vi) भाषा में ब्रज की समाहार क्षमता का प्रयोग।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) अरे भगाओ इस बालक को
होगा यह भारी उत्पाती
जुलुम मिटाएंगे धरती से
इसके साथी और संघाती
'यह उन सबका लीडर होगा
नाम छपेगा अख़बारों में
बड़े-बड़े मिलने आएंगे
लद-लदकर मोटर-कारों में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ:- प्रस्तुत ~~[illegible]~~ पद्यांश नागार्जुन की लम्बी कविता "हरिजन गाथा" से ली गयी है।

प्रसंग व व्याख्या:-

अग्नि काण्ड के बाद जब एक बच्चा जन्म लेता है तो उसकी भविष्य की बात को ज्योतिषी ने इस प्रकार उजागर किया कि यह बालक क्रान्ति की चेतना का वाहक होगा। इसके सभी दोस्त-मित्र मिलकर पृथ्वी पर पाप मिटायेगें। यह बालक सबका लीडर होगा। इसका बड़ा नाम होगा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

काव्यगत सौन्दर्य :-

(1) नागार्जुन की क्रान्तिकारी चेतना और उनका मार्क्सवादी मूल्य इन पंक्तियों में दिखाई पड़ता है।

(2) व्यवस्था परिवर्तन के लिए 'क्रान्ति' के मार्क्सवादी दर्शन को समर्थन व उसका भारतीय परिस्थिति के अनुरूप संशोधन भी करते हैं।

(3) यहाँ गीता का दर्शन भी देखा जा सकता है जो अवतारवाद को समर्थन करता है - "यदा-यदा धर्मस्य"

(4) नागार्जुन केवल प्रश्न व समस्या ही उठाते उसका समाधान भी बताते हैं वह वैकल्पिक रास्ता उनके बीच से ही होकर जायेगा।

(5) भाषा अत्यन्त भावानुकूल है।

(6) भाषा में प्रवाह व सरलता है।

(7) भाषा - तद्भवी प्रधान।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'अपनी मूल प्रकृति में पद्मावत एक त्रासदी है।' आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? तार्किक उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विजय देव नारायण शाही ने जब से 'पद्मावत' को हिंदी की प्रथम त्रासदी कहा है तब से आलोचकों के बीच में यह विवाद और विमर्श का विषय रहा है कि 'पद्मावत' अपनी मूल प्रकृति में क्या है? क्या इसमें त्रासदी के वे सारे तत्व उपस्थित हैं जो पाश्चात्य परम्परा में त्रासदी के लिए आवश्यक माने हैं? क्या 'पद्मावत' शेक्सपीयर के 'मैक्बेथ' 'हैमलेट' 'ओथेलो' तथा 'किंग लीयर' की त्रासदी है?

'पद्मावत' में त्रासदी के वे सभी तत्व निश्चित रूप से खोजे जाने चाहिए जो पाश्चात्य परम्परा में त्रासदी में पाये जाते हैं। मैक्बेथ के आधार पर इसका मूल्यांकन किया जा सकता है।

यदि कथानक के आधार पर देखें तो पद्मावत भारतीय परम्परा से अधिक पाश्चात्य की परम्परा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

के अधिक विकट प्रतीत होती है। भारतीय परम्परा में भारतीय प्रावधान में फलागम और फल-प्राप्ति के रूप में सुखान्त की कल्पना की जाती है वहीं त्रासदी में 'चरम अवस्था' के बाद दुखान्त का महत्त्व अधिक है। 'पद्मावत' में सुखान्त के स्थान पर दुखान्त को अधिक महत्त्व दिया गया। रत्नसेन की मृत्यु के बाद नागमती और पद्मावती द्वारा जौहर की प्रथा का पालन कर लिया जाता है यही त्रासदी में 'कैथारसिस' विरेचन का चित्र होता है।

अलाउद्दीन भी यहाँ आकर यही कहता है कि —

"छिन्हीं उठाये डार एक मूठी,
× × पृथ्वी झूठी।"

सुल्तान अलाउद्दीन को पृथ्वी झूठी लगने लगती है। और यही भाव दुनिया के सबसे बड़े त्रासदी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नाटक लेखक शेक्सपीयर के नाटकों 'मैकबेथ' और ओथेलो तथा हैमलेट व्यथा इना है
मैकबेथ कहता है कि—"Time is a tale told by an Idiot"
और हैमलेट का नायक कहता है कि— "To be or not to be that is the question"
और यही सवाल मिर्जा ग़ालिब भी करते हैं कि—
"जला है जिस्म जहाँ दिल भी जल गया होगा।
कुरेदते हो जो अब राख जुस्तजू क्या है॥"
~~ऐसा~~ लग रहा है जैसे ग़ालिब शेक्सपीयर को ही संबोधित कर रहे हैं।
कथा और कथानक दोनों में नाटों पर चढ़ बातें। में त्रासदी के तत्वों का अवलोकन आसानी से किया जा सकता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लेकिन ऐसा नहीं है कि वह केवल एक त्रासदी है। इसे 'प्रेमाख्यान' के रूप में हिन्दी साहित्य में स्थान प्राप्त है और अपने कथानक स्तर पर एक प्रतीक अर्थ भी धारण करती है।

फिर भी निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 'पद्मावत' अपने मूल चरित्र में त्रासदी के अत्यन्त निकट है।

11½/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) मैं प्रेम को संदेह से ऊपर समझती हूँ। वह देह की वस्तु नहीं, आत्मा की वस्तु है। संदेह का वहाँ जरा भी स्थान नहीं और हिंसा तो संदेह का ही परिणाम है। वह संपूर्ण आत्मसमर्पण है। उसके मंदिर में तुम परीक्षक बनकर नहीं, उपासक बनकर ही वरदान पा सकते हो।

व्याख्या :- प्रेम सन्देह से ऊपर की वस्तु है। यह देह से नहीं आत्मा से किया जा सकता है। प्रेम में हिंसा और संदेह दोनों स्वीकार्य नहीं है क्योंकि जहाँ संदेह होगा वहाँ हिंसा आ ही जायेगी। प्रेम सम्पूर्ण आत्म समर्पण है। प्रेम उपासना की वस्तु है। इसे अधिकार भाव से प्राप्त नहीं किया जा सकता है

सौन्दर्य गत विशेषताएं :-

① प्रेम की कल्पना उदात्त माना गया है।

② प्रेम को सन्देह और हिंसा से ऊपर माना गया है।

③ प्रेम अधिकार की नहीं, बल्कि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अर्जित की जाने वाली वस्तु है।

(4) प्रेम के सम्बन्ध में चारों भक्त कवियों के यहाँ यही भाव है—
सूर, तुलसी, जायसी तथा कबीर सभी ने प्रेम के लिए आत्मसमर्पण को महत्त्वपूर्ण माना है—
"कबीरा यह घर प्रेम का, खाला का घर नाहीं"
" प्रेम पहाड़ ~~कठिन~~ ~~विधि~~ गढ़ा"

(5) भाषा तत्सम्मी प्रधान।

(6) सूत्र शैली का प्रयोग। —"प्रेम देह की वस्तु नहीं, आत्मा की वस्तु है"

(7) निमाज गुण व सरलता से युक्त।

2/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) संभवतः पहचानती नहीं हो और न पहचानना ही स्वाभाविक है क्योंकि मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ जिसे तुम पहचानती रही हो। दूसरा व्यक्ति हूँ, और सच कहूँ तो वह व्यक्ति हूँ जिसे मैं स्वयं नहीं पहचानता हूँ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ मोहन राकेश के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' से ली गयी है।

प्रसंग :- नाटक दृश्य-3 में, कालिदास मल्लिका के पास आता है उसी समय अपने बारे में बताता है।

व्याख्या :- कालिदास मल्लिका से कहते हैं कि वह बहुत दिनों बाद आया है इसलिए उसका न पहचानना स्वाभाविक है। कालिदास स्वयं इतना बदल चुका है कि वह खुद को ही नहीं पहचानता है। स्वयं से कटा हुआ व्यक्ति समय के साथ द्वंद्व में पड़ा महसूस करता है।

. Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रचनात्मक नोट्स:-

(1) अस्तित्ववाद का प्रभाव स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि यदि मनुष्य अपनी भावनाओं के अनुसार जीवन नहीं जीता है तो इंसानों के अलावा खुद से और भी अजनबी हो जाता है।

(2) आचार्य शुक्ल ने हाथी को प्रच्छन्नताओं का पर्दा कहा है व्यक्ति अपने मूल से कटने के बाद कहीं का भी नहीं रहता है।

(3) यही भाव कृष्ण बलदेव वैद की कहानी "मेरा दुश्मन" में भी दिखाई पड़ता है।

(4) भौतिकवादी संस्कृति और उसकी व्यावसायिकता पर भी चोट है। इससे व्यक्ति को अजनबीपन और अकेलापन ही मिलता है मातुल का भी यही भाव है।

(5) भाषा, सरल, सीधी व प्रवाहमयी।

(6) भाषा नायक के कथ्य के अनुसार होते वाक्य व पात्रानुकूल।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) पर मुझसे कुछ नहीं बोला जाता। बस मेरी बाँहों की जकड़ कसती जाती है, कसती जाती है। रजनीगन्धा की महक धीरे-धीरे तन-मन पर छा जाती है। तभी मैं अपने भाल पर संजय के अधरों का स्पर्श महसूस करती हूँ, और मुझे लगता है, यह स्पर्श, यह सुख, यह क्षण ही सत्य है, वह सब झूठ था, मिथ्या था, भ्रम था।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ:- प्रस्तुत गद्यांश राजेन्द्र यादव के द्वारा संकलित कहानी संग्रह 'एक दुनिया समानान्तर' की मन्नू भण्डारी की कहानी 'यही सच है' से ली गयी है।

प्रसंग व व्याख्या:- संजय और निशीथ के द्वंद्व में नायिका को जब निशीथ की तरफ से निराशा मिलती है तो वह अपने को संजय के करीब पाती है। उसे संजय का साथ ही सत्य प्रतीत होता है। उसका अतीत उसे झूठ और मिथ्या प्रतीत होता है।

रचनात्मक सौन्दर्य:-
(I) प्रेम और वास्तविक जीवन के बीच के द्वंद्व को बहुत ही यथार्थवादी तरीके उठाया गया है।
(II) 'आषाढ़ के एक दिन' के मल्लिका के "भावनाओं में भावनाओं के वरण" को नकारने वाली

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

आधिक वास्तविक प्रेम दृष्टि का परिचय यहाँ मिलता है।

(iii) वर्तमान को सत्य मानता तथा अतीत को भ्रम व मिथ्या कह कर जीवन को अधिक प्रमाणिकता प्रदान की गयी है।

(iv) भाषा अत्यन्त ही प्रभावमयी और बिम्बों से युक्त है।

(v) शब्दावली प्रसंगानुकूल व मनोभावों के अनुरूप है।

(vi) दृश्य और स्पर्श बिम्ब के साथ गन्ध बिम्ब का अद्भुत प्रयोग

(v) प्रसंग व कहानी दोनों आधुनिक जीवन दृष्टि को व्यक्त करते हैं। वस्तु जगत की भौतिक स्थितियों में सच्चाई प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) जब आप याद करेंगे कि मुगल बादशाहों के ज़माने में इन कोल किरातों का आखेट होता था और जो पकड़े जाते थे, वे काबुल में बेच दिए जाते थे और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के शासन में लाखों की तादाद में उन्हें जरायम पेशा करार दिया गया, तब तुलसीदास की प्रगतिशीलता समझ में आएगी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ:- प्रस्तुत गद्यांश रामविलास शर्मा के निबन्ध 'तुलसी साहित्य में सामंतवाद विरोधी मूल्य' से लिया गया है।

प्रसंग एवं व्याख्या:- शर्मा जी के अनुसार तुलसी की प्रगतिशीलता का पता तब चलता है जब हम उनके द्वारा शबरी, निषाद राज आदि के प्रसंगों की गहन पड़ताल करते हैं। वे तुलनात्मक रूप से कहते हैं कि मुगल काल में कोल और किरात जैसी जनजातियों का आखेट किया जाता था। यद्यपि "White man Burden" का सिद्धान्त देने वाले अंग्रेज भी जनजातियों से 'जरायम' पेशा कराते थे। परन्तु मध्य काल में तुलसी दास ने राम, शबरी, निषाद के माध्यम से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इन जनजातियों के बराबरी व सम्मान का हक प्रदान करते है।

रचनात्मक सौन्दर्य:-

① तुलसी की प्रगतिशीलता को शबरी, शम्बूक तथा निषाद राज प्रकरण में देखने की वकालत की गयी है।

② अपने को 'सभ्य' कहने वाले यूरोपी - ब्रिटिश भी इन जातियों से अमानवीय व्यवहार करते थे।

③ इतिहास के प्रसंगों के आधार पर तुलसी काव्य के सामंत विरोधी मूल्यों की पहचान।

④ जाति, धर्म के या किसी भी आधार पर सामाजिक विभेद को अस्वीकार किया गया है।

⑤ भाषा सरल व तद्भवी।

⑥ शब्दावली में उर्दू- 'इमारतें', तथा 'प्रगतिशीलता' तत्सम शब्दावली भी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ड़) जब समस्त हिन्दू जाति की एक वैदिक सम्प्रदाय न रही तो वही मसल चरितार्थ हुई कि "एक नारि जब दो से फँसी जैसे सत्तर वैसे अस्सी"। हमारी एक हिन्दू जाति के असंख्य टुकड़े होते-होते यहाँ तक खण्ड हुए कि अब तक नये-नये धर्म और मत-प्रवर्त्तक होते ही जाते हैं।

बालकृष्ण भट्ट

सन्दर्भ:- प्रस्तुत गद्यांश 'निबन्ध निलय' में संकलित निबन्ध "भारतीय संस्कृति" से लिया गया है। इसके लेखक गुलाब राय हैं।

प्रसंग व व्याख्या:- भारतीय संस्कृति में समय के साथ आने वाली कमियों के प्रभाव को रेखांकित किया गया है।

गुलाब राय के अनुसार भारतीय वैदिक संस्कृति जब कई टुकड़ों बंट आई तो इसका पतन आरम्भ हो गया। एक हिन्दू जाति का विभिन्न धर्मों, मतों व सम्प्रदायों बटना इसके पतन को दिखाता है। और अब यह प्रवृत्ति चल निकली है कि इसमें लगातार नये-नये धर्म व मत-प्रवर्तक निकल रहे हैं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

रचनात्मक सौन्दर्य:-

(1) हिन्दू जाति के बौद्धिक एकता के विखण्डन पर चिन्ता व्यक्त की गयी है।

(2) भारतीय संस्कृति के पतन के कारणों की पड़ताल की गयी है।

(3) एक हिन्दू जाति की आवश्यकता पर जोर दिया जा रहा है।

(4) यद्यपि नारीवादी रचनाकार नारी वाले उदाहरण को पुरुषवादी मानसिकता कह कर विरोध करती हैं।

(5) अतीत के प्रति मोहग्रस्तता भाव तथा हिन्दूवादी दृष्टि का आरोप भी लगाया जाता है।

(6) भाषा सरल व प्रवाहमयी।

(8) नारी वाले उदाहरण में नैतिक मर्यादा के उल्लंघन का आरोप।

3/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'गोदान' नामकरण की सार्थकता पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

हिन्दी का पहला महाकाव्यात्मक उपन्यास 'गोदान' हिन्दी साहित्य में यथार्थवादी रचना का आरम्भ भी है और प्रेमचन्द के उपन्यास कर्म की प्राप्ती भी। इसके नामकरण को लेकर यह निवाल उठता रहा है कि इसे होरी का उपन्यास क्यों न कहा जाए। इस नामकरण की सार्थकता क्या है?

प्रेमचन्द के अधिकतर उपन्यास स्थिति प्रधान है। इसके नामकरण से सम्पूर्ण कथानक व कथा वस्तु बोध हो जाता है। डॉ गोपाल राय ने इसी सन्दर्भ में प्रेमचन्द के उपन्यासों के नामकरण की सार्थकता की चर्चा करते हुए कहते है कि रचनाकार की रचनात्मक सृजनात्मकता का अन्दाजा उसके नामकरण से ही लग जाता है। इस कसौटी पर प्रेमचन्द की 'गोदान' इसी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सार्थकता धारण करता है।

'गोदान' में गाय से ही उपन्यास की शुरुआत होती है और उसकी प्राप्ति, मृत्यु और फिर उसके दान पर ही उपन्यास समाप्त होता है। पूरे कथानक में 'गोदान' की 'गाय' ही सबसे महत्वपूर्ण पात्र है जिसके आस पास, होरी, धनिया, रूपा, सोना, और गोबर से लेकर मातादीन दातादीन की जिन्दगी घूमती है

कहानी का अधिकतम प्रसंग गाय प्राप्ति की कोशिश, उसकी प्राप्ति, उसके मृत्यु से जुड़ी है कहानी अर्थात कथा नायक भले होरी है परन्तु, उसकी "मरजाद" की डोरी भी

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

गाय से ही जुड़ी हुई है जो
होरी की मृत्यु पर 'गोदान
से ही खत्म होती है।

यद्यपि उपन्यास मे
शहरी भाग को देखकर
लगता है कि 'गोदान' नाम
सार्थक प्रतीत नहीं हो रहा
है फिर भी शहरी कथा
का लगभग प्रत्येक पात्र ग्रामीण
कथा से कहीं न कहीं अवश्य
जुड़ता प्रतीत होता है।

टूटता सामंत, उभरते पूंजीवाद,
बिखरती मीडिया भौतिकता तथा
स्वार्थी होते स्वाधीनता आंदोलन
को भी 'गोदान' नामकरण
मानो प्रतीकों के माध्यम से
और सार्थक हो उठता है।
संक्रमण काल के उपन्यास में
प्रेमचन्द के औप-न्यासिक

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि तथा जीवन दृष्टि में कहीं कोई संकुलता नज़र नहीं आता है। इनानी के 'गोदान' के माध्यम से न केवल अपने जीवन की बल्कि भारतीय औपन्यासिक परम्परा की 'धर्मभूमि' बदल कर उसका 'कायाकल्प' कर देते हैं।

'गोदान' नामकरण अपनी अर्थवत्ता, कथ्य बोधकता, मार्मिकता तथा प्रसंग गहनता के कारण पूरी सार्थकता धारण करता है। इससे भिन्न कोई और नामकरण इस कालजयी रचना के लिए नहीं हो सकता था।

अच्छा है।

11/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रेमचंद की कहानी 'ईदगाह' की श्रेष्ठता के कारणों पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'ईदगाह' कहानी प्रेमचन्द की सर्वश्रेष्ठ कहानियों में एक है। इसमें प्रेमचन्द ने बाल-मनोविज्ञान का ऐसा वर्णन किया है कि हिन्दी कहानी के इतिहास में यह में अद्वितीय हो उठा है।

प्रेमचन्द ने एक बालक के 'हमीद' के माध्यम से गरीब, और विषमता आदि समाचारों पर एक साथ विचार किया है। यह हमें सोचने पर मजबूर करती है कि कोई बालक यदि अपना बचपन नहीं जी पा रहा है तो उसे उसमें समाज की अपनी चूक भी है।

कहानी की श्रेष्ठता का एक यह भी है कि यदि बच्चा समय से पहले ज्यादा समझदार हो जाय तो उसके बाल विज्ञान पर क्या प्रभाव पड़ता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

वही दादी और हामिद के बीच का वार्तालाप पढ़ी दिखा रहा है। हामिद का अपने मित्रों के साथ वार्तालाप उनकी तर्क-क्षमता और समय पूर्व उनकी प्रौढ़ता का परिचायक है।

शिल्प की दृष्टि से भी यह कहानी अत्यन्त श्रेष्ठ है प्रेमचन्द ने भाषा को अत्यन्त सरल, सीधा और प्रवाहमयी रखा है। भाषा में हिन्दी तथा उर्दू का समन्वय है प्रेमचन्द की समन्वय चेतना का अद्भुत संगम है।

इस प्रकार ईदगाह कहानी प्रेमचन्द की एक श्रेष्ठ कहानी है। 'ठाकुर का कुआँ', 'सद्गति', 'पूस की रात' और 'कफन' से पूर्व की बाल मनोविज्ञान की पड़ताल है।

6½/15

गद्य (हिन्दी) और उर्दू के अलग शैली पर भी चर्चा करें। तिलिस्मी, पहलू की भी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
ट्विटर: twitter.com/drishtiias
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)